शिक्षक द्वारा ICT का उपयोग एवं शिक्षा प्रणाली

डॉ0 दीनदयाल व्यास प्राचार्य, साहेवाल स्मृति इंस्टिटयूटेशन बी.एड. कॉलेज, नोहर, जिला हनुमानगढ़ राजस्थान

प्रस्तावना:–

शिक्षक हमेषा विधार्थी होता है। सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक केन्द्रीय भुमिका में होते हैं। ICT के उपयोग के कारण अब अध्यापक का कक्षा में नेता के रूप में कार्य समाप्त हो गया है। शिक्षक की भुमिका को यथा स्थान ही रखा है। जैसे–पाठ योजना तैयार करना आदि।

ICT के षिक्षको द्वारा अधिक षिक्षार्थी केन्द्रित, ज्ञानार्जन हेतु वातावरण बनाने में मदद देने वाले उपकरण के रूप में देखा जाता हैं।

ICT का उद्देष्य

- सामान्य रूप से ICT का उपयोग सबसे अधिक प्रषासनिक कार्यो के लिए होता है।
- षिक्षक अक्सर ICT का ''नियमित कार्यो'' का रिकार्ड रखने, पाठ योजना विकास, बुनियादी जानकारी की खोज आदि के लिए करता है।
- ICT के उपयोग अधिक जानकार शिक्षक कम्प्यूटर सहायता अनुदेषक का उपयोग अन्य षिक्षको की तुलना में कम करते हैं लेकिन कुल मिलाकर अधिक करते हैं।
- कठिन व जटिल प्रत्ययो का आसान बनाकर तैयार किया जाता है।
- शिक्षक की अनुपस्थिति में भी सुगमता से सीखते हैं।
- व्यक्तिगत विभिन्नताओं के आधार पर सीखने के अवसर प्राप्त होते हैं।
- ICT को विभिन्न क्षमताओं वाले शिक्षर्थियों को उनकी क्षमताओं के अनुसार सीखने के लिए तैयार किया जाता है।
- व्यवसायिक विकास जारी रखने के शिक्षक की प्रभावी भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहन प्रणालिया विकसित की जाती हैं।
- शिक्षा के क्षेत्र में ICT शुरू करने से सीखे गये सबक साझा करने की पहल हुई।
- शिक्षक के लिए एक सहयोगी के रूप में ICT आई है।

ICT का महत्व :–

ICT को षिक्षकों द्वारा अधिक ''षिक्षर्थी केन्द्रित'' ज्ञानार्पजन हेतु वातावरण बनाने में मदद देने वाले उपकरणों के रुप में देखा जा सकता है। OECD (आर्थिक सहयोग और विकास के लिए संगठन) देषों में अनुसंधान के निष्कर्ष से यह माना जाता है कि ICT का सबसे प्रभावी उपयोग उन मामलों में होता है, जिनमें षिक्षक, ICT की मदद से, पूरी कक्षा में विचार विमर्ष या छोटे समूह के कार्यो के जरिये विधार्थियों की समझ और सोच को चुनौती देते हैं। पारम्परिक ''षिक्षक केन्द्रित पद्वतियों की ओर जाने में समर्थता प्रदान करने व सहयोग के लिए महत्वपूर्ण उपकरण के रुप में ICT देखा जाता है।

ICT को षिक्षण में बदलाव में सहयोग प्रदान करने तथा प्रचलित षैक्षिक प्रथाओं के सहयोग /संवर्द्वन में प्रयुक्त किया जा सकता है। ICT का षिक्षकों द्वारा षिक्षण पद्वतियों में उपयोग अनिवार्य रुप से पारम्परिक तरीकों की षिक्षण पद्वतियों में मामूली संवर्धन से लेकर उनके षिक्षण के दृष्टिकोण में अधिक मौलिक परिवर्तन करने के लिए किया जाता है।

ICT का उपयोग प्रचलित शैक्षणिक पद्वतियों के सुदृढीकरण के साथ–साथ षिक्षको और छात्रों के बीच संवाद के तरीके को सुदृढ करने के लिए किया जाता है। जानकारी की प्रस्तुतीकरण के लिए ICT उपकरणों का प्रयोग मिश्रित रुप से प्रभावी होता है। प्रस्तुत उपकरण और एलसीडी. प्रोजेक्टर, टेलीविजन, इलैक्ट्रिोनिक,व्हाइट बोर्ड, निर्देषित वेब टूर्स, जहा छात्र एक साथ कम्प्यूटर स्क्रीन पर एक ही प्रकार के संसाधनों को देखते हुए है। ICT का उपयोग मिश्रित रुप में देखने को मिलता है। यह वर्ग की समझ व कठिन अवधारणों के बारे चर्चा को बढ़ावा दे सकता है। ICT के इस प्रकार के उपयोग से पारस्परिक शैक्षणिक पद्वतियों को सुदृढ कर सकते हैं और चर्चा किए जा रहे विषय से या उपयोग किए जा रहे उपकरण से ध्यान हटाया जा सके।

ICT के लाभ

- शिक्षकों को ICT के उपयोग के लाभ के लिए तैयार करना केवल तकनीकी

कौषल से अधिक है।

- शिक्षण मे ICT सफल एकीकरण के लिए शिक्षक की ICT कौशल में तकनीकी महारथ प्राप्त कराई जातीहै।
- शिक्षण और सीखने में ICT उपयोगी है।
- ICT महत्वपूर्ण स्त्रोत है जो षिक्षक के व्यावसायिक विकास को बढ़ावा देने में सश्रम हैं।
- आमने–सामने तथा दूरस्थ शिक्षा दोनो वातावरण में और वास्तविक समय में या एसिंक्रोलॉजी के लिए ICT महत्वपूर्ण भुमिका में होता हैं।
- ICT का उपयोग बालकों को प्रत्यक्ष प्रभावित करता हैं।
- ICT का उपयोग बालकों को विषय वस्तु को सरलता से समझने में सहयता प्रदान करता हैं।
- ICT द्वारा उपयोगिता शिक्षण विधिया बालक को कठिनाईयों से परे पाठ्य वस्तु समझने में सहयोग प्रदान करती हैं।
- कक्षा–कक्ष की परम्परागत विधियों को नवीनता प्रदान करते हुए कक्षा–कक्ष को आधुनिक रुप प्रदान करता हैं।
- ICT विशिष्ट विधार्थीयों के लिए अत्यधिक उपयोगी सिद्व हो

(1) सेवा–पूर्व, शिक्षा-शास्त्र, विषय की महारथ प्रबंधन कौशल और विभिन्न **शिक्षण** उपकरणों (ICT सहित) के उपयोग पर ध्यान केन्द्रित करना।

(2) सेवा के दौरान, संरचित, आमने सामने तथा दूरस्थ शिक्षा के अवसर, सेवा पूर्ण प्रशिक्षण को विस्तृत करने और सीधे शिक्षक की जरूरतों के लिए प्रासंगिकता के निर्माण में सहायक हैं।

(3) शिक्षकों के ICT द्वारा सक्षम सतत् औपचारिक शैक्षणिक और तकनीकी सहायता दैनिक जरूरतों औरचुनौतियों पर लक्षित करना।

निष्कर्षः–

षिक्षक का प्रभावी व्यावसायिक विकास, प्रभावी शषिक्षण पद्धतियों के मॉडल पर आधारित होता है। व्यवसायिक विकास गति विधियाँ प्रभावी तरीको और व्यवहार के मॉडल के अनुरूप होनी चाहिए। षिक्षकों के बीच सहयोग का प्रोत्साहन तथा समर्थन करना चाहिए। विधालय स्तर पर ICT सुविधओं के उपयोग से सतत् व्यावसायिक विकास को सफलता के लिए एक प्रमुख कारक के रूप में देखा जाता है। खास कर तब जबकि ये षिक्षकों की दैनिक आवष्यकताओ और प्रथाओं के लिए सीधे प्रासांगिक संसाधनों और कौशालों पर केन्द्रित है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1- Gorbert, M. (1971) Educational (Technology) Uni. Of Hall I.O.E.
2- Anand, B. Rao & Ravishankar Reading in Educational Technology.
3- Ebel.R.L. (1966) Measuring Educational Achievement.
4- Kapoor, Urmila (1986) षैक्षिक तकनीकी, साहित्य प्रकाष, आगरा।
5- Oad L.K. (1990) षिक्षा के आयाम,राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
6- Pophan W.J.et al.- Instructional objectives Chicago.
7- श्रीवास्तव एस. एस.तथा कमला राय (1998)अभिक्रमित अनुदेषन, श्रीरामप्रकाषसनवाराणासी।
8- श्रीवास्तव, शंकरषरण. (1998) षिक्षा में नवाचार एवं आधुनिक प्रविष्टियाँ, M/s हरप्रसादभार्गव, आगारा।
9- Srivastava S.S. (1998) Innovations and Modern Trends in Education.
10- RahmanSaultat: A Study in Education Television, Ministry of Education Govt. of India 1976